بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक06.05.2016 मस्जिद नुसरत जहाँ डैन्मार्क।

व्यर्थ के काम जिन्होंने आजकल हमें घेरा हुआ है तथा प्रत्येक घर में टी वी और इन्टर नैट की सुविधा के रूप में उपलब्ध हैं, इनसे बचना अति आवश्यक है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

लगभग ग्यारह वर्ष पूर्व मैं यहाँ आया था, समय बीतने का पता नहीं चलता। कई बच्चे थे आज जो जवान हो गए होंगे, कई ऐसे होंगे जो बच्चों के माँ-बाप बन चुके होंगे। प्रत्यक्ष रूप से भी अल्लाह तआला ने यहाँ जमाअत पर बड़ी कृपा की है और मस्जिद के साथ एक बड़ा हॉल, दफ़्तर, लाईब्रेरी तथा अन्य सुविधाएँ मिल गई हैं। इसी प्रकार मस्जिद के सामने जो मकान लिया था उसमें भी बड़ा विस्तार हो गया है तथा मिश्नरी का निवास स्थान, अतिथि भवन तथा एक बड़ा हॉल उपलब्ध हो गया है। ये सब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल हैं। यदि आप लोगों के घरों की आबादियाँ बढ़ी हैं, यदि आपके माल बढ़े हैं, जमाअत को प्रत्यक्ष भवनों के रूप में अल्लाह तआला ने विस्तार प्रदान किया है तो निस्सन्देह इन बातों पर हमें अल्लाह तआला का आभारी होना चाहिए। यह आभार किस प्रकार प्रकट हो तथा इसकी क्या आवश्यकता है।

हुज़ूर पुर नूर ने फ़रमाया- हमें अपनी सोचें भी मोमिनों वाली बनानी होंगी। हमें केवल प्रत्यक्ष रूप में धन्यवाद अथवा केवल मुंह से अल-हमदुलिल्लाह कह कर ख़ुश नहीं हो जाना चाहिए। अपितु यह देखना होगा कि क्या हम अल्लाह तआला के बताए हुए आदेशों पर कार्यरत् हैं? क्या हम उस प्रकार जीवन व्यतीत कर रहे हैं जो एक मोमिन का जीवन है। अल्लाह तआला ने आपको या आपके दादा को अहमदियत क़बूल करने का सामर्थ्य प्रदान किया है तो यह अल्लाह तआला की विशेष कृपा है और अल्लाह तआला ने किसी नेकी के कारण यह कृपा प्रदान की है। इन नेकियों को बढ़ाना तथा अपनी दशाओं को पहले से अच्छा करना अनिवार्य है अन्यथा हमें याद रखना चाहिए कि यदि हमारे क़दम रुक गए तो हम अपनी पीढ़ियों को भी दीन से दूर करने वाले होंगे और यूँ उन्हें अल्लाह तआला की इस विशेष कृपा से जिसकी भविष्य वाणी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी, उससे वंचित करने वाले होंगे अर्थात मसीह मौऊद की नियुक्ति तथा उसका मानना। जिनके बाप दादा अहमदी हुए यदि उनकी नस्लें दीन से दूर हट गईं तो वे अपने पूर्वजों की दुआओं से वंचित रहेंगी। जिनके पूर्वज अहमदी हुए, उनके पूर्वजों ने तो अपनी बैअत की प्रतिज्ञा को निभाया और दुनया से सिधारे। इस अभिलाषा तथा दुआ के साथ गए कि उनकी पीढ़ियाँ भी यह प्रतिज्ञा पूरी करने वाली होंगी। अतः इस समय आपमें से बहुत से ऐसे हैं जिनको यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या हम इस प्रतिज्ञा को निभाने वाले हैं जिसका आग्रह हमारे पूर्वजों ने हमसे किया था। इसी प्रकार जिन्होंने स्वयं अहमदियत क़बूल की है वे यह निरीक्षण करें कि क्या हमने अपने ईमान में बढ़ने तथा अपने कर्मों को सुन्दर बनाने का प्रयास किया है या कर रहे हैं, अथवा वह केवल एक क्षणिक प्रभाव था जिसके कारण अहमदियत क़बूल कर ली थी। लाभ तो हमें तभी प्राप्त होगा जब हमारा प्रत्येक क़दम उन्नति की ओर बढ़ रहा होगा।

भावार्थ यह है कि हर प्रकार के लोगों को जो अहमदियत में शामिल हुए, सबको इन बातों पर विचार करना होगा कि अब उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षानुसार कर्म करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत में आने का हक़ अदा कर सकें। हर अहमदी औरत और मर्द को आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है कि क्या अपनी हालतों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षानुसार ढालने का प्रयास कर रहे हैं? क्या हम अपने बच्चों का इस रंग में प्रशिक्षण करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि इनमें दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने की

भावना आरम्भ से ही पैदा हो जाए। क्या हमारी अपनी गतिविधियाँ इस्लाम की शिक्षानुसार तथा हमारे बच्चों के लिए उदाहरण हैं? क्या हमारी नमाज़ें तथा हमारी इबादतें और हमारा प्रत्येक कर्म अल्लाह तआला और रसूल की बताई हुई शिक्षा के अनुसार है? इन बातों की गहराई जानने और अपने निरीक्षण के सुन्दर स्तर स्थापित करने के लिए हमारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मार्ग दर्शन फ़रमाया हुआ है। इस समय मैं उनमें से कुछ बातें पेश करुंगा जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमसे चाहते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत को नसीहत करते हुए बड़े दर्द के साथ फ़रमाते हैं- हमारी जमाअत के लिए अनिवार्य है कि इस बिगाड़ के ज़माने में जबकि हर ओर पथभ्रष्टता, सुस्ती और गुमराही की हवा चल रही है, तक़्वा धारण करें। दुनया का यह हाल है कि अल्लाह तआला के आदेशों को प्रमुखता प्राप्त नहीं है, हक़ अदा करने तथा वसीय्यतों को पूरा करने की चिंता नहीं है। न अपने दायित्व पूरे करते हैं, न ही जो वसिय्यतें हैं उनको पूरा करने वाले हैं। दुनया तथा इसके कामों में अत्यधिक व्यस्त हैं। तनिक सी हानि दुनया की होती देखकर दीन के आदेश को छोड़ देते हैं। अपनी दुनया के नुक़सान को बचाने का प्रयास करते हैं, दीन चाहे चला जाए, अल्लाह तआला के हक़ छोड़ देते हैं। स्वार्थ के कारण एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। संकीर्ण मानसिकता की भावनाओं के समक्ष बड़े दुर्बल हैं। उस समय तक कि ख़ुदा ने उन्हें दुर्बल कर रक्खा है, पाप करने का साहस नहीं करते। यदि पापों से बचे हुए हैं तो इस लिए नहीं कि नेकी का प्रभुत्व है अपितु इस कारण से कि साहस नहीं है, भय है कुछ चीज़ों का। परन्तु जब वह भय दूर हो जाता है तो फिर पाप करने लग जाते हैं। आज इस ज़माने में हर स्थान पर देख लो तो यही पता चलेगा कि मानो सच्चा तक़्वा उठ गया है तथा सच्चा ईमान बिल्कुल नहीं रहा है। वही नवीनतम क़ुरआन मौजूद है जैसा कि ख़ुदा तआला ने कहा था कि اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ बहुत सा भाग हदीसों का उपलब्ध है तथा बरकतें भी हैं परन्तु दिलों में ईमान तथा कर्मठता बिल्कुल नहीं है। इस लिए अब इनके मुक़ाबले में ख़ुदा तआला एक नई क़ौम जीवित लोगों की पैदा करना चाहता है तथा इसी कारण हमारी तबलीग़ है कि तक़्वा की ज़िन्दगी प्राप्त हो जावे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- दूसरों को तो छोड़ें, हम जो आपकी बैअत में शामिल होने का दावा करते हैं, कितने हैं हममें से जो अल्लाह तआला के आदेशों को अपने ऊपर लागू करने वाले हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने जिनों और इंसानों को इबादत के लिए पैदा किया है। क्या हम अपने सांसारिक कार्यों को अपनी इबादतों पर क़ुर्बान करते हैं अथवा इसके उलट है, या हमारी इबादतें हमारे दुनया के कामों पर क़ुर्बान हो रही हैं। ऐसे भी हैं कि यदि समय पर नमाज़ पढ़ भी लें तो गले से उतारने का प्रयास करते हैं। उन लोगों का हाल तो अलग रहा जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नहीं माना। हममें से भी ऐसे हैं लोगों से व्यवहार करने में। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि एहसान का व्यवहार करो परन्तु बहुत से ऐसे हैं जो एहसान का व्यवहार तो एक ओर रहा, दूसरों का हक़ मारने का प्रयास करते हैं फिर ऐसे भी हैं जो दुनया की हानि तो सहन नहीं करते परन्तु दीन की हानि हो रही हो तो सह लेते हैं। कितने ही हममें से ऐसे हैं जो भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं रखते, छोटी छोटी बातों पर भड़क जाते हैं। यदि ग़ैर यह करें तो हम कह सकते हैं कि मूर्ख हैं ये लोग। परन्तु यदि हममें से कोई ऐसा करे तो यह एक कष्टदायक बात है। अतः हर कोई स्वयं इन बातों में अपना निरीक्षण कर सकता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये शब्द हमें सदैव सामने रखने चाहिएँ कि अल्लाह तआला एक नई क़ौम को पैदा करना चाहता है। अतः हमने इन जीवित लोगों में शामिल होने के लिए बैअत की है इस लिए इसका हक़ अदा करने के लिए आपकी बातों पर हमें ध्यान देना होगा ताकि जीवित लोगों की क़ौम में शामिल हो सकें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

जो व्यक्ति केवल अल्लाह तआला से डर कर उसके मार्ग को खोजने का प्रयास करता है तथा उस से इस बात की गिरह खोलने के लिए दुआ करता है तो अल्लाह तआला अपने क़ानून (अर्थात जो लोग हममें से होकर प्रयास करते हैं, हम अपनी राहें उन्हें दिखाते हैं) के अनुसार स्वयं हाथ पकड़ कर राह दिखा देता है। जब तक इंसान पवित्र मन तथा निष्ठा एंव श्रद्धा से समस्त अनुचित रास्तों तथा अभिलाषाओं के द्वारों को अपने ऊपर बन्द करके ख़ुदा तआला ही के आगे हाथ नहीं फैलाता, उस समय तक इस योग्य नहीं होता कि अल्लाह तआला की सहायता एंव समर्थन उसको प्राप्त हो। परन्तु जब वह अल्लाह तआला ही के द्वार पर गिरता तथा उसी से दुआएँ करता है तो उसकी यह अवस्था रहमत और सहायता को ग्रहण करने

वाली होती है। यह न समझो कि अल्लाह तआला अनभिज्ञ है, अल्लाह तआला आसमान पर बैठा इंसान के दिल के कोनों तक की जानकारी रखता है। यदि किसी कोने में भी किसी प्रकार का अन्धकार अथवा शिर्क व बिदअत का कोई अंश होता है तो उसकी दुआओं और इबादतों को उसके मुंह पर उलटा मारता है और यदि देखता है कि उसका दिल हर प्रकार के स्वार्थ तथा अन्धकार से मुक्त और पवित्र है तो उसके लिए रहमत के द्वार खोलता है तथा उसे अपनी छाया में लेकर उसके पालन पोषण का स्वयं दायित्व लेता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः एक सच्चे अहमदी को अपने दिल को हर प्रकार के शिर्क तथा बिदअतों से पाक करना होगा। वे लोग जो कहते हैं कि हमने बड़ी दुआएँ कीं, बड़ी लम्बी लम्बी दुआएँ कीं, बहुत दुआएँ कीं और क़बूल नहीं हुईं, अपने दिलों को टटोलें, निरीक्षण करें कि कहीं कोई छिपा हुआ शिर्क तो नहीं, किसी प्रकार की बिदअतों में लिप्त तो नहीं अथवा अन्य इस प्रकार की बातें तो नहीं हो रहीं हैं जिन से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है।

फिर एक स्थान पर यह स्पष्ट करते हुए कि तक़्वा की स्थापना ही इस जमाअत को क़ायम करने का उद्देश्य है सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले से ख़ुदा तआला ने यही चाहा है तथा उसने मुझ पर प्रकट किया है कि तक़्वा कम हो गया है। यह सिलसिला स्थापित करने का उद्देश्य ही तक़्वा की स्थापना है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अब अल्लाह तआला ने निश्चय किया है कि वह दुनया को तक़्वा एंव पवित्रता वाले जीवन का नमूना दिखाए। इसी उद्देश्य से यह सिलसिला स्थापित किया है। फ़रमाया, अब हमें आत्म निरीक्षण की आवश्यकता है कि क्या हमारी अपनी दशाएँ ऐसी हैं कि हम स्वयं तक़्वा एंव शुद्धता का नमूना बन सकें और अन्य लोग हमसे शिक्षा प्राप्त करें। फिर इस बात को बयान करते हुए कि आप अपनी जमाअत को किस प्रकार की देखना चाहते हैं? आप फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले को स्वयं अल्लाह तआला ने अपने हाथ से स्थापित किया है तथा इस पर भी हम देखते हैं कि बहुत से लोग आते हैं और वे व्यक्तिगत लक्ष्य रखते हैं अर्थात उनका अपना स्वार्थ होता है, नेकी और तक़्वा की प्राप्ति उनका उद्देश्य नहीं होता अपितु उनके कुछ व्यक्तिगत स्वार्थ होते हैं जिसके कारण वे आ जाते हैं। यदि इच्छाओं की पूर्ति हो गई तो ठीक है अन्यथा किधर का दीन तथा किधर का ईमान। फिर छोड़कर चले गए, फिर ईमान कोई नहीं रहा। परन्तु यदि इसकी तुलना में, फ़रमाया, सहाबा के जीवन पर दृष्टि डाली जावे तो उनमें एक भी ऐसी घटना नज़र नहीं आती। उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया, हमारी बैअत तो तौबा की बैअत ही है परन्तु उन लोगों की बैअत अर्थात सहाबा की बैअत तो सिर कटाने की बैअत थी। उनको अपने अस्तित्व की, सम्मान की चिंता थी न किसी श्रेष्टता की अभिलाषा थी, न किसी बड़े ओहदे की इच्छा थी। उद्देश्य था तो केवल यह कि हम इस्लाम के लिए जान, माल, समय तथा सम्मान को क़ुरबान करने के लिए सदैव तत्पर रहें। ओहदेदारों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, फिर बड़े दर्द से हमें हमारे आचरण के सुन्दर होने, नेकियों पर स्थापित होने, बुराईयों को छोड़ने की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति अपने पड़ौसी को अपने आचरण में बदलाव दिखाता है कि पहले क्या था और अब क्या है, वह मानो एक प्रकार की करामत दिखाता है। जब कोई व्यक्ति एक सिलसिले में शामिल होता है तथा इस सिलसिले के सम्मान और महानता का ध्यान नहीं रखता और इसके विरुद्ध आचरण दिखाता है तो वह अल्लाह के सामने उत्तरदायी होता है। क्यूँकि वह केवल अपने आपको ही विनाश में नहीं डालता बल्कि अन्य लोगों के लिए एक बुरा नमूना होकर उनको सज्जनता एवं हिदायत के मार्ग से वंचित रखता है। फ़रमाया, जहाँ तक आप लोगों का सामर्थ्य है ख़ुदा तआला से दुआ मांगो तथा अपनी पूरी शक्ति एंव साहस से अपनी दुर्बलताएँ दूर करने का प्रयास करो। जहाँ असमर्थ हो जाओ वहाँ सत्य एंव शुद्धता के साथ हाथ (दुआ के लिए) उठाओ, क्यूँकि भय एंव निष्ठा के साथ उठाए हुए हाथ जो सत्य एंव निष्ठा की प्रेरणा के कारण उठते हैं, ख़ाली वापस नहीं होते। फिर फ़रमाया कि यह एक पक्की बात है कि यदि कोई व्यक्ति अपने भीतर अपने मानव समाज के लिए सहानुभूति का जोश नहीं पाता वह कंजूस है। यदि मैं एक मार्ग देखूँ जिसमें भलाई और लाभ है तो मेरा कर्त्तव्य है कि मैं पुकार पुकार कर लोगों को बुलाऊँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः अपने नेक नमूने स्थापित करके हमें फिर तबलीग़ का हक़ भी अदा करना होगा और यह प्रत्येक अहमदी का दायित्व है, इस ओर हमें ध्यान देना चाहिए। अन्ततः एक समय आएगा कि लोग सुनेंगे भी, परन्तु जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि यदि कोई नहीं भी सुनता तब भी हमें पैग़ाम पहुंचाते रहना चाहिए परन्तु इसके साथ ही जैसा कि आपने फ़रमाया कि आपकी जमाअत से सम्बंधित होकर हमें अपने नमूने भी उच्च स्तर के पेश करने चाहिएँ और फिर लोगों का ध्यान भी हमारी ओर आकर्षित होगा।

फिर हमें हमारी दशाओं को सुन्दर बनाने का उपदेश देते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इलहाम में जो यह आया है कि الا الذین علوا باستکبار यह प्लेग के सम्बंध में अरबी भाषा का इलहाम है, जो तेरे घर के अन्दर आएगा उसे मैं बचाऊँगा परन्तु वे लोग जो अपने आपको ऊँचा समझते हैं और इसकी आपने यह व्याख्या फ़रमाई कि पूर्ण रूप से आज्ञा पालन नहीं करते, उन पर यह बात लागू नहीं होती। अल्लाह तआला के लिए यह आवश्यक नहीं होगा कि वह अवश्य ही उनकी रक्षा करे। फ़रमाया- इस लिए आवश्यक है कि बार बार कश्ती-ए-नूह को पढ़ो तथा उसके अनुसार कार्य करो। तुमने जो अपनी क़ौम से धिक्कार लेनी थी, ले चुके परन्तु यदि इस धिक्कार को लेकर ख़ुदा तआला के साथ भी तुम्हार मामला शुद्ध न हो तथा उसकी रहमत और कृपा के नीचे न आओ तो फिर कितनी हीन एंव कठिनाई की बात है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह निरीक्षण करने की आवश्यकता है। नए अहमदी हैं अथवा पुराने अहमदी हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर जब तक हम अपने कर्मों का सुधार नहीं करेंगे, उन बरकतों से लाभान्वित नहीं हो सकते जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने से मिलनी हैं और न ही हम ख़ुदा तआला की सुरक्षा की छाया में आ सकते हैं। प्रत्येक ने एक संकल्प किया है कि मैं दीन को दुनया पर प्राथमिकता दूँगा। ख़ुद्दामुल अहमदिया में भी एहद दोहराया जाता है, अन्सारुल्लाह में भी एहद दोहराया जाता है, लजना में भी एहद दोहराया जाता है, जमाअत भी बैअत के समय यह एहद लेती है तो यदि एहद की रक्षा करोगे तथा अमानतें जो तुम्हारे हवाले की गईं हैं, ओहदेदार हैं, उनके सपुर्द ओहदों की अमानतें हैं, सामान्य अहमदी हैं उनके सपुर्द अमानत है, वे अहमदियत का सटीक नमूना बन कर दिखाएँ और किसी के लिए ठोकर का कारण न हों, यदि ऐसा होगा तो फिर ईमान का वृक्ष सुदृढ़ तने पर खड़ा हो जाएगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः हमें विनम्रता पैदा करने की भी आवश्यकता है क्यूँकि इसी के द्वारा हम अपनी मानसिकता के बलिदान का ध्येय पूरा कर सकते हैं, अपने ईमान में प्रगति कर सकते हैं। व्यर्थ के काम जिन्होंने आजकल हमें घेरा हुआ है तथा प्रत्येक घर में टी वी और इन्टर नैट की सुविधा के रूप में उपलब्ध हैं, इनसे बच सकते हैं। इनसे बचना अनिवार्य है अपने ईमान में व्यापकता के लिए, और तभी हम फल फूल लाने वाली शाखाएँ बन सकते हैं, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से, और अपनी भी तथा अपनी पीढ़ियों की भी दुनया व आख़िरत संवारने वाले बन सकते हैं। एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सिलसिले के सुन्दर भविष्य के विषय में सूचना देते हुए फ़रमाया कि यह ज़माना भी आध्यात्मिक लड़ाई का ज़माना है, शैतान के साथ युद्ध आरम्भ है। शैतान अपने समस्त हथयारों एंव षडयन्त्रों को लेकर इस्लाम के दुर्ग पर आक्रमण कर रहा है और वह चाहता है कि इस्लाम को पराजित करे परन्तु ख़ुदा तआला ने इस समय शैतान के अन्तिम युद्ध में उसको सदैव के लिए पराजित करने हेतु इस लिसलिसे को स्थापित किया है।

अल्लाह करे हम अपने ईमानों को सुदृढ़ करने वाले हों, अल्लाह तआला के आदेशानुसार कार्य करते हुए उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करने वाले हों, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों, अपने कर्मों के द्वारा दुनया को सत्य मार्ग दिखाने वाले हों और अल्लाह तआला ने जो हम पर उपकार किए हैं उनका वास्तविक रंग में धन्यवाद करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसका सामर्थ्य प्रदान करे।